राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवम् मूर्तिकला प्रदर्शनी

२००५

कालिदास समारोह २००४ के अवसर पर राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते हुए महामहिम राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़, समीप ही हैं माननीय कुलपति प्रो. रामराजेश मिश्र एवं संभागायुक्त माननीय जयदीप गोविन्द

मध्य प्रदेश संस्कृत बोर्ड एवं लोक शिक्षण संचालनालय तथा स्कूली शिक्षा विभाग, भोपाल के तत्वावधान में कालिदास अकादमी उज्जैन द्वारा पुरानी विधानसभा भोपाल में आयोजित वरिष्ठ चित्रकारों की कालिदास साहित्य पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए महामहिम राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़, माननीय संस्कृति मंत्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा एवं माननीय शिक्षा मंत्री श्री ढालसिंह बिसेन।

महाकवि कालिदासकृत
'ऋतुसंहारम्' से अनुप्राणित

राष्ट्रीय कालिदास
चित्र एवम् मूर्तिकला
प्रदर्शनी-२००५

मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल
डॉ. बलराम जाखड़
द्वारा देवप्रबोधनी एकादशी
विक्रमाब्द २०६२
शनिवार, दिनाङ्क १२ नवम्बर २००५ को समुन्मीलित

कालिदास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
उज्जैन, मध्यप्रदेश

महाकवि कालिदासकृत
'ऋतुसंहारम्' से अनुप्राणित
राष्ट्रीय
कालिदास
चित्र एवम् मूर्तिकला
प्रदर्शनी-२००५
विक्रमाब्द २०६२

परामर्श
जयदीप गोविन्द
सम्भागायुक्त, उज्जैन

नीरज मण्डलोई
जिला कलेक्टर, उज्जैन

सम्पादन
डॉ. जगदीश शर्मा
डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
डॉ. रमेश आर्य

सम्पादन-सहयोग :
डॉ. सन्तोष पण्ड्या

प्रकाशक :
डॉ. कमलेशदत्त त्रिपाठी
निदेशक,
कालिदास अकादमी,
म.प्र. संस्कृति परिषद्
उज्जैन

प्रारूपण :
अक्षय आमेरिया

प्रदर्शनी-संयोजन
आर.पी. शर्मा

छाया चित्रण
राजेश आर.

सहयोग
मिलन गुप्ता

मुद्रक :
पंचायतीराज मुद्रणालय,
उज्जैन

निदेशकीय

कविकुलगुरु कालिदास समग्र भारतीय संस्कृति के प्रतीक महाकवि हैं। महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व ने भारतीय कला के सभी रूपों को बहुत गहरे प्रभावित किया है। कला की समीक्षा और समीक्षा के सिद्धान्तों के निर्धारण पर तो वरिष्ठ चिंतकों ने पर्याप्त विचार किया है, परन्तु कला के विविध रूपों पर उनके प्रभाव का आकलन, विश्लेषण और मूल्यांकन अभी तक भलीभाँति नहीं हो पाया है। फिर भी यह निर्विवाद है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक कलाकार रचना और पुनर्रचना के लिए महाकवि की रचनाओं को अजस्र स्रोत के रूप में अंगीकार करते रहे हैं। महाकवि कालिदास की कृतियों में अनेक चित्रकला और मूर्तिकला के पारम्परिक सन्दर्भ मिलते हैं, जो उनकी इस विशिष्ट कला की मर्मज्ञता को द्योतित करते हैं। इस वर्ष महाकवि की अमर कृति ऋतुसंहार पर आधारित प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है। महाकवि ने अपने काव्य में सुन्दर वर्णों (अक्षरों) के द्वारा प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित किया है, तो कलाकारों ने प्रकृति के इन नाना रूपों को सुन्दर वर्णों (रङ्गों) और रेखाओं के द्वारा रूपायित किया है। विविध कलारूपों में कालिदास के भावों के प्रतिफलन के समाकलन के अकादमी के उद्देश्य की पूर्ति की अपेक्षा को यह प्रदर्शनी कुछ सीमा तक पूर्ण करती है।

हम कामना करते हैं कि यह प्रदर्शनी पारम्परिक कला के प्रसार में साधक बने तथा कालिदास के भावों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बने।

आप सब महाकवि के इस चाक्षुष बिम्ब के दर्शन के लिए प्रदर्शनी में आमंत्रित हैं।

कमलेशदत्त त्रिपाठी
निदेशक
कालिदास अकादमी,
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, उज्जैन

ओ.पी. टॉक
धर्मशाला (हिमा.प्र.)

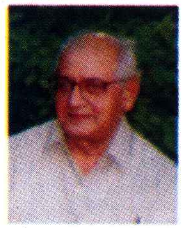

सी.डी. मिस्त्री
अहमदाबाद (गुजरात)

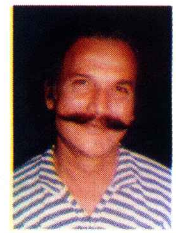

एम. सूर्यमूर्ति
काडियाकाडु (तमिलनाडु)

मदनलाल
(मूर्तिकार)
वाराणसी

जे.एम. नेल्सन
(मूर्तिकार)
भिलाई (छ.ग.)

डॉ. केदारनाथ शुक्ल
(संस्कृत विद्वान्)
उज्जैन

राष्ट्रीय
कालिदास
चित्र एवम् मूर्तिकला
प्रदर्शनी - २००५

पुरस्कृत कलाकार

कालिदास अकादमी द्वारा प्रदत्त पाँच पुरस्कार — रुपये पन्द्रह हज़ार प्रत्येक

चित्रकला

श्री पवनकुमार कुमावत	किशनगढ़ (राजस्थान)	रंगी सूरत
डॉ. दिवा मिश्र	भोपाल (मध्यप्रदेश)	पावस में पुलकित मयूर
श्री देवेन्द्र शर्मा	जयपुर (राजस्थान)	शीतल छाया
श्री चन्दन यादव	उज्जैन (मध्यप्रदेश)	प्रचण्ड सूर्यः

मूर्तिकला

श्री खुशाल मच्छिन्द्रनाथ जाधव, खामगाँव (महाराष्ट्र) — ऋतुसंहारम्

प्रदर्शनी इस वर्ष

प्राचीन विशाला उज्जैन नगर भूमि में अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी प्रतियोगिता प्रेरक एवं उत्साहवर्धक है। कविकुलगुरु कालिदास की काव्य दृष्टि, अप्रतिम एवम् सौन्दर्ययुक्त है। महाकवि कालिदास के साहित्य को चित्रकारों तथा मूर्तिकारों के मध्य पहुंचाने में इस प्रदर्शनी की महती भूमिका रही है। इस वर्ष की प्रदर्शनी में महाकवि कालिदास के विश्वविश्रुत रीति काव्य ऋतुसंहार पर केन्द्रित कृतियों में भारतीय चित्रकारों एवम् मूर्तिकारों ने अपनी-अपनी कला भाषा के माध्यम से महाकवि कालिदास के काव्यमर्म को प्रकट करने का प्रयास किया है। समसामयिक शैली के कलाकारों के लिये तो कई मंच हैं। लेकिन पूरे भारत वर्ष में पारम्परिक एवम् लोककला की यह एक मात्र प्रदर्शनी है एवम् कालिदास अकादमी का उद्देश्य भी यही है कि पारम्परिक लोककला को पोषित करना जिसे भारत के विभिन्न अंचलों के कलाकारों द्वारा निखारा जा रहा है। इसके लिये भारत के सभी चित्र एवं मूर्तिकारों को कालिदास अकादमी म.प्र.संस्कृति परिषद् कालिदास अकादमी धन्यवाद अर्पित करती है।

अपेक्षा है कलाकार **आगामी वर्ष २००६ में महाकवि कालिदास के ग्रंथ 'रघुवंशम्'** पर केन्द्रित अपनी कलाकृतियाँ रूपायित कर प्रेषित करेंगे।

इस वर्ष भारत के विभिन्न अंचलों से २१९ प्रवेश-पत्रों के माध्यम से कुल २४५ कलाकृतियाँ प्राप्त हुईं। इनमें २१४ चित्र एवम् ३१ मूर्तियाँ सम्मिलित रहीं।

निर्णायक मण्डल ने एकमत होकर ७१ चित्र एवं १७ मूर्तियों को प्रदर्शनार्थ चयनित किया। इस वर्ष क्रमशः जलगाँव, नागपुर, नांदेड़, पूना, खामगाँव, वर्धा, नासिक, देहरादून, ललितपुर, पोरबन्दर, भावनगर, अहमदाबाद, बड़ोदा, नाथद्वारा, चित्तौड़गढ़, जयपुर, किशनगढ़, कोटा, वनस्थली, उदयपुर, राजनाँदगाँव, रायपुर, लखनऊ, आगरा, नई दिल्ली, श्रीकाकुलम् हैदराबाद, सदरसा-बिहार, मालदा, जबलपुर, नीमच, ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल, बड़वाह, शाजापुर, रतलाम, राजगढ़ (ब्यावरा) चित्रकूट, होशंगाबाद, धार, नागदा, इन्दौर, देवास सहित उज्जैन के अनेक कलाकारों ने इस प्रदर्शनी में शिरकत की।

आर.पी.शर्मा
प्रदर्शनी संयोजक

रंगी सूरत

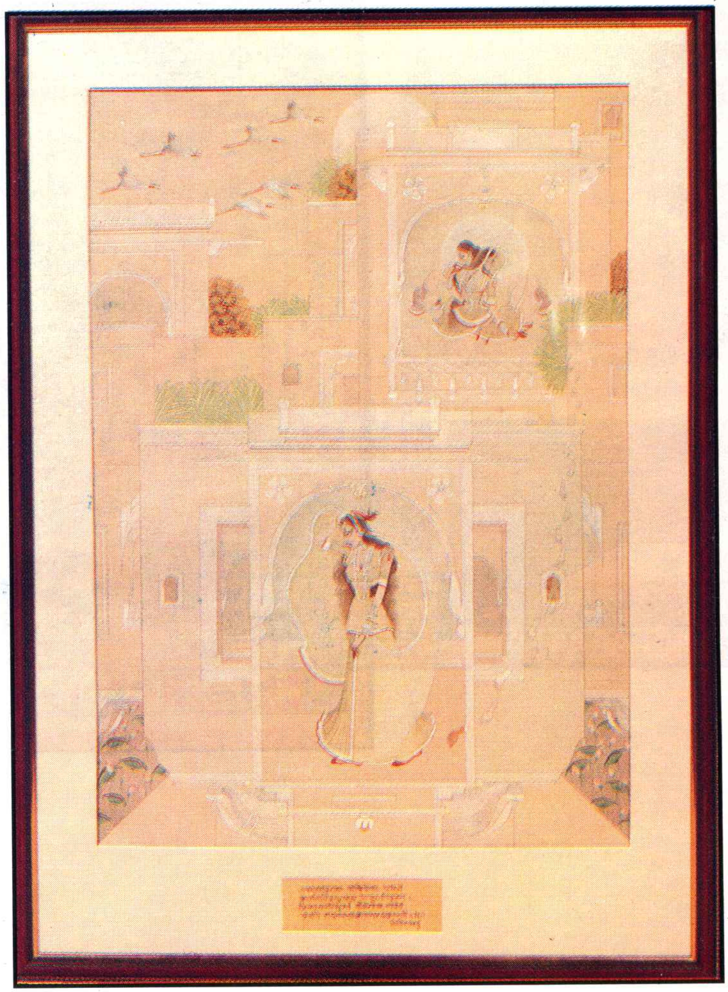

श्री पवनकुमार कुमावत

जन्म	- १३ जून १९६६
शिक्षा	- एम.ए., बी.एड्.
	भित्तिचित्रण - विधि (फ्रेस्को) में वनस्थली विद्यापीठ से डिप्लोमा
पुरस्कार	- राजस्थान ललित कला अकादमी १९९१, २००१
	नागरीदास कला संस्थान १९९४, १९९८
एकल व समूह प्रदर्शनी	- वी.के.वी. हुरड़ा, भीलवाड़ा, किशनगढ, अजमेर, जयपुर, शिमला, मुम्बई नेहरू सेन्टर
चित्र - संग्रह	- आर्किटेक्ट, आर.के.पुरी, जयपुर तथा कलाप्रेमियों के निजी संग्रह में
सम्प्रति	- व्याख्याता, चित्रकला, राजस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय, किशनगढ़ (अजमेर)
सम्पर्क	- १९९, शिवमन्दिर के पीछे, मित्र निवास कॉलोनी, मदनगंज, किशनगढ़ (अजमेर)
दूरभाष	- ०१४६३-२४८९५५ (नि.) ९८२९४५३२८३ (मो.)

पावस में पुलकित मयूर

डॉ. दिवा मिश्र

जन्म	- ३ अप्रैल १९६८
शिक्षा	- एम.ए., पी-एच.डी.
अनुभव	- मानव संग्रहालय में विभिन्न चित्र और शिल्प-विधाओं में प्रशिक्षण, भारत भवन, भोपाल में शिल्प और ग्राफिक्स
कला-प्रदर्शनी	- डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर; राष्ट्रीय कालिदास प्रदर्शनी २०००,२००१,२००३ तथा २००४
चित्र - संग्रह	- अमेरिका, लंदन, डेनमार्क, इटली, एडिनबर्ग, भोपाल, दिल्ली, मुंबई और बैंगलोर के निजी संग्रहों में
सम्पर्क	- द्वारा डॉ. दिनेशचन्द्र मिश्र, एम-३८, 'दिवस', ओल्ड सुभाषनगर, भोपाल
दूरभाष	- ०७५५-२५८७१८८ (नि.) ९४२५००६६८९ (मो.)

शीतल छाया

श्री देवेन्द्र शर्मा

जन्म - २८ फरवरी १९७४

शिक्षा - एम.ए. (कला वर्ग)

अनुभव - १८ वर्ष से चित्रांकन

पुरस्कार - सनबीम क्लब, जयपुर १९९५; जवाहर कला केन्द्र, जयपुर १९९५

चित्र-संग्रह - परम पूज्य आचार्य श्री यशोविजयजी महाराज तथा सन्यासी श्री प्रद्युम्न सूरिसागर महाराज के जैन चित्र-संग्रह तथा परमपूज्य आचार्य श्री पद्म सागर सूरि के चित्र-संग्रह में।

सम्पर्क - सुन्दर आर्ट, १८३, जनकपुरी द्वितीय, इमली फाटक, जयपुर-१५ (राजस्थान)

दूरभाष - ०१४१-२५९१९०९

प्रचण्ड सूर्यः

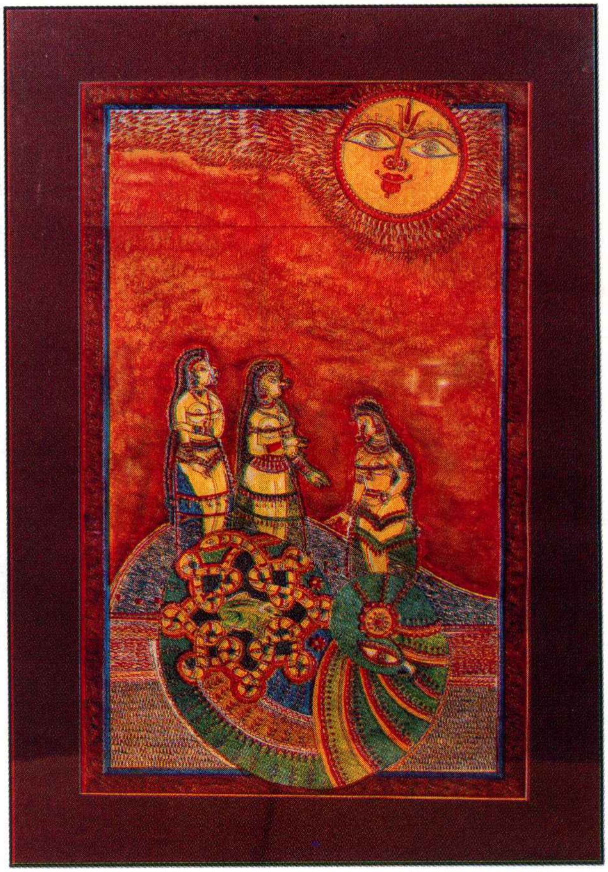

श्री चन्दन यादव

जन्म	- २० अगस्त १९६२, उज्जैन
शिक्षा	- एम.ए. (चित्रकला), एम.कॉम. (व्यवसाय प्रबन्ध) स्नातकोत्तर पत्रोपाधि (संग्रहालय विज्ञान) एवम् बी.एड्.
पुरस्कार	- राष्ट्रीय कालिदास प्रदर्शनी, उज्जैन १९८६, १९८९, १९९२, १९९३ तथा १९९७ राष्ट्रीय भारतीय सांस्कृतिक कला प्रदर्शनी, मुंबई १९८९, १९९० तथा १९९१ राज्य स्तरीय डॉ. वि.श्री. वाकणकर स्मृति आमंत्रित चित्रकला प्रदर्शनी, उज्जैन १९८९ राज्य स्तरीय डॉ. वि.श्री. वाकणकर स्मृति चित्रकला प्रदर्शनी, उज्जैन १९८९, १९९० तथा १९९७ राज्य स्तरीय रामकथा कला प्रदर्शनी, भोपाल १९९१, राज्यस्तरीय 'मेरा इन्दौर' चित्र प्रदर्शनी १९९१, राष्ट्रीय चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी, उदयपुर २००२
एकल प्रदर्शनी	- कालिदास अकादमी कला दीर्घा, उज्जैन १९९० एवम् देवलालीकर कलादीर्घ, इन्दौर १९९०
समूह प्रदर्शनी	- जहाँगीर कलादीर्घा, मुंबई, उज्जैन, इन्दौर, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद
चित्र - संग्रह	- रिलायंस समूह, मुंबई, एल.एण्ड टी., विकास प्राधिकरण, इन्दौर; भारती कला भवन, ललित कला संस्थान, उज्जैन; लोकमान्य तिलक सांस्कृतिक न्यास, उज्जैन; तूलिका संवाद समूह, भोपाल; विश्व हिन्दू परिषद्, न्यूयार्क एवम् अनेक निजी संग्रहों में
सम्प्रति	- कला निर्देशक, शासकीय स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन
सम्पर्क	- एच-१६/१९, ई.डब्ल्यू.एस. ऋषिनगर, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष	- ०७३४-५१९३५५ (नि.) ०७३४-२५१९८७३ (का.)

ऋतुसंहारम्

श्री खुशाल मच्छिन्द्रनाथ जाधव

जन्म - २ सितम्बर १९८२
शिक्षा - शिल्पकला (अन्तिम वर्ष)
अनुभव - तीन वर्षों से शिल्प-निर्माण
पुरस्कार - अमरावती स्टेट आर्ट के 'शिल्प आलाप' में द्वितीय पुरस्कार
सम्पर्क - कलाचार्य चंघे गुरुजी चित्र शिल्प महाविद्यालय, खामगाँव, जिला-बुलढाणा (महाराष्ट्र)
दूरभाष - ०२५३-५६६१२४३

राष्ट्रीय कालिदास प्रदर्शनी 2005
चयनित कलाकृतियाँ

चित्रकला -

1.	श्रीमती सोनल जैन	अहमदाबाद	वसन्तानन्दानुभूति	7,000
2.	सुश्री नयना मेवाड़ा	अहमदाबाद	ऋतुसंहारम्	10,000
3.	सुश्री शुभा वैद्य	इन्दौर	कालिया	10,000
4.	श्री जगदीश नागर	इन्दौर	ऋतुसंहारम्	30,000
5.	सुश्री सुषमा जैन	इन्दौर	ऋतुसंहारम्	8,000
6.	श्री चन्दन यादव	उज्जैन	प्रचण्ड सूर्यः	10,000
7.	श्री योगेश खत्री	उज्जैन	मद्यसेवन करते कामीजन	21,051
8.	श्री गोपाल सोलंकी	उज्जैन	पुष्प शृंगार	21,000
9.	श्री अभिषेक तोमर	उज्जैन	कामोद्दीपन	10,000
10.	श्री अखिलेश गौड़	उज्जैन	सम्पूर्ण ऋतुसंहार	25,000
11.	सुश्री श्रुति व्यास	उज्जैन	शृंगार	11,000
12.	डॉ. विष्णु भटनागर	उज्जैन	ऋतुसंहारम्	15,000
13.	डॉ. उषा भटनागर	उज्जैन	ऋतुसंहारम्	5,000
14.	सुश्री तरुणा जोशी	उज्जैन	ऋतुसंहारम्	10,000
15.	सुश्री रिमझिम डोसी	उज्जैन	ऋतुसंहारम्	विक्रय हेतु नहीं
16.	श्री राजेश जोशी	उज्जैन	वैमनस्य विस्मृतिः	5,000
17.	सुश्री सुनीला खण्डेलवाल	उज्जैन	ग्रीष्म का तेज	5,000
18.	श्री मुकेश बिजौले	उज्जैन	नयनाभिराम	15,000
19.	सुश्री माया नारायणे	उज्जैन	वसन्त	विक्रय हेतु नहीं
20.	सुश्री कल्पना	उज्जैन	मिलन	5,000
21.	श्री शरद मालवीय	उज्जैन	प्रसन्नता	2,000
22.	श्री भरत जोशी	उज्जैन	शृंगार	विक्रय हेतु नहीं
23.	सुश्री कामिनी त्रिवेदी	उज्जैन	शृंगार	15,000
24.	सुश्री शशि कोरी	उज्जैन	सम्पूर्ण ऋतुसंहारम्	9,000
25.	सुश्री वसुधा तिवारी	उज्जैन	वर्षा आगमन	5,000
26.	सुश्री मधु माथुर	उज्जैन	बसन्त शृंगार	5,000
27.	श्री दीपक भारद्वाज	उदयपुर	मदोन्मत्त	8,000
28.	श्री राजाराम शर्मा	उदयपुर	बाला	11,000
29.	श्री पवनकुमार कुमावत	किशनगढ़	रंगी सूरत	40,000
30.	श्री पवनकुमार कुमावत	किशनगढ़	भयातुर कामिनी	50,000
31.	श्री भागचन्द्र मालाकार	किशनगढ़	चन्द्रमुखी	7,000
32.	श्री भागचन्द्र मालाकार	किशनगढ़	मनोहारी	7,000
33.	श्री शंकरसिंह राठौर	किशनगढ़	यौवनाः	10,000

34.	श्री शफीकुर्रहमान शैरानी	किशनगढ़	ग्रीष्म	20,000
35.	सुश्री पल्लवी लोढा	कोटा	मनोहारिणी	10,000
36.	श्री डी.पी. छाबरा	कोटा	ताप-पीड़ित	15,000
37.	सुश्री नीलम शर्मा	ग्वालियर	नायिकायें	5,000
38.	श्री भवानी शंकर शर्मा	ग्वालियर	शृंगार	5,000
39.	श्रीमती चन्दना मिश्रा	चित्रकूट	परिस्थिति जन्य	15,000
40.	श्रीमती चन्दना मिश्रा	चित्रकूट	प्रेयसी	10,000
41.	श्री भगवानदास गुप्ता	जबलपुर	वसन्तिका	15,000
42.	श्री भगवानदास गुप्ता	जबलपुर	प्रमदा	10,000
43.	श्री विवेक बालूणी	जबलपुर	मयूर नृत्य	35,000
44.	श्री कैलाश तिवाड़ी	जयपुर	ग्रीष्म रैन	15,000
45.	श्री कैलाश तिवाड़ी	जयपुर	हेमन्त सुन्दरी	15,000
46.	श्री देवेन्द्र शर्मा	जयपुर	शीतल छाया	11,000
47.	श्री फूलचन्द वर्मा	जयपुर	ग्रीष्म ऋतु	20,000
48.	श्री कमलकुमार वर्मा	जयपुर	शृंगार	12,000
49.	श्री रमेश आनन्द	देवास	प्राकृतिक आनन्द	25,000
50.	सुश्री अंशु पंचोली	देवास	उत्पलाभूषणधारिणी	25,000
51.	श्री इसहाक शेख	देवास	शशिबाण	5,000
52.	श्री संजीव चेतन	देहरादून	सुन्दरियाँ और कामदेव	8,000
53.	श्री अशोक पाटीदार	धार	ऋतुराज वसन्त	15,000
54.	श्री अनिरुद्ध विश्वास पुंडकर	नागपुर	हेमन्त ऋतु	11,000
55.	श्री श्यामसुन्दर शर्मा	नाथद्वारा	वसन्त ऋतु उत्सव	15,000
56.	सुश्री तेजवन्ती यु.टी.	पुणे	निसर्ग संहार	20,000
57.	सुश्री प्रेरणा जैन	बडवाह	सन्ध्या-सुन्दरी	सम्पर्क द्वारा
58.	श्री प्रवीण कृष्णात्रे	बडवाह	वर्षा में प्रेम और तपस्या	सम्पर्क द्वारा
59.	सुश्री अलका सूर्यकान्त त्रिवेदी	बडौदा	बसन्त	15,000
60.	सुश्री अलका सूर्यकान्त त्रिवेदी	बडौदा	ऋतुसंहारम्	20,000
61.	श्री रमेशचन्द्र एन. राठौड	भावनगर	निदाघकालोऽयम्	5,000
62.	श्री झाला भावेश भाई	भावनगर	तृषाकुलम्	10,000
63.	श्री मणियर मीरा प्रह्लाद भाई	भावनगर	शृंगार	3,000
64.	श्री पटेल अशोकजी	भावनगर	शृंगार	10,000
65.	डॉ. दिवा मिश्र	भोपाल	पावस में पुलकित मयूर	5,000
66.	सुश्री आवृति भटनागर	भोपाल	मनमयूर	6,000
67.	श्री सतीश चह्वाण	भोपाल	मदनातुर नितम्बिनी	विक्रय हेतु नहीं
68.	सुश्री बी.रेखा	भोपाल	ऋतुसंहारम्	8,000
69.	सुश्री अनामिका शर्मा	रतलाम	ऋतुसंहारम्	विक्रय हेतु नहीं
70.	श्रीमती मनीषा वर्मा	राजनाँदगाँव	विवशता	3,000
71.	श्री राजेश डोडिया	लखनऊ	शृंगार चर्चा	10,000

मूर्तिकला -

1.	श्री किशोर सोनवणे	अजमीर सोडाणा	नववधू	11,000
2.	श्री राजेन्द्र वर्मा 'ताम्रकार'	इन्दौर	आश्रय	37,000
3.	श्री रवीन्द्र गणपतलाल मालवीय	उज्जैन	पर्वत सौन्दर्य	17,000
4.	श्रीमती गंगा बाई मालवीय	उज्जैन	सिंगार	21,000
5.	श्री जगमोहन सिंह चौहान	उज्जैन	आश्रय	5,000
6.	सुश्री शशि कोरी	उज्जैन	अभिसारिका	5,000
7.	श्री प्रेमकुमार मनमौजी	उज्जैन	मयूर	5,000
8.	श्री रामेश्वर नागर	उज्जैन	ऋतुसंहारम्	5,000
9.	श्री राजाराम पांचाल	उज्जैन	सुन्दरियों द्वारा ऋतुसंहार संवाद	10,000
10.	श्री राजेश वाडिया	उज्जैन	मयूर और सर्प	5,000
11.	श्री शिरीष वाडिया (चिन्टू)	उज्जैन	ग्रीष्म-प्रकोप	20,000
12.	श्री खुशाल एम. जाधव	खामगाँव	ऋतुसंहारम्	10,000
13.	श्री शाम पुंडलीक कुमावत	नसीराबाद	उमंग	विक्रय हेतु नहीं
14.	श्री संजय उमडेकर	बडवाह	सरोवर पर हाथी	2,000
15.	श्री आर. सी. वट	भोपाल	ग्रीष्म ऋतु	4,000
16.	श्री जितेन्द्र वेगड	भोपाल	बैरी से मित्रता	25,000
17.	श्री रवीन्द्र चौधरी	सावड़ा (जलगाँव)	प्रमदा	23,000

राष्ट्रीय कालिदास प्रदर्शनी, २००६
(चित्र एवम् मूर्तिकला)

महाकवि कालिदासविरचित
'रघुवंशम्'
से
अनुप्राणित मौलिक कलाकृतियाँ आमन्त्रित हैं।
बोधिका प्रवेश-पत्र जुलाई २००६ से उपलब्ध रहेंगे।

कृपया सम्पर्क करें -
निदेशक
कालिदास अकादमी
म.प्र. संस्कृति परिषद्
विश्वविद्यालय मार्ग, उज्जैन-४५६०१०
दूरभाष एवं फेक्स : ०७३४-२५१५४०४

National Kalidas Exhibition, 2006
(Painting and Sculpture)

Original Painting and Sculpture Exhibits
inspired by the
RAGHUVANSHAM OF KALIDASA
are invited.
Prospectus will be available from
July 2006 onwards.

Please write to
Director
Kalidasa Akademi
M.P. Sanskriti Parishad
Vishvavidyalaya Marg, Ujjain-456010
Telephone and Fax: 0734-2515040

1

2

3

4

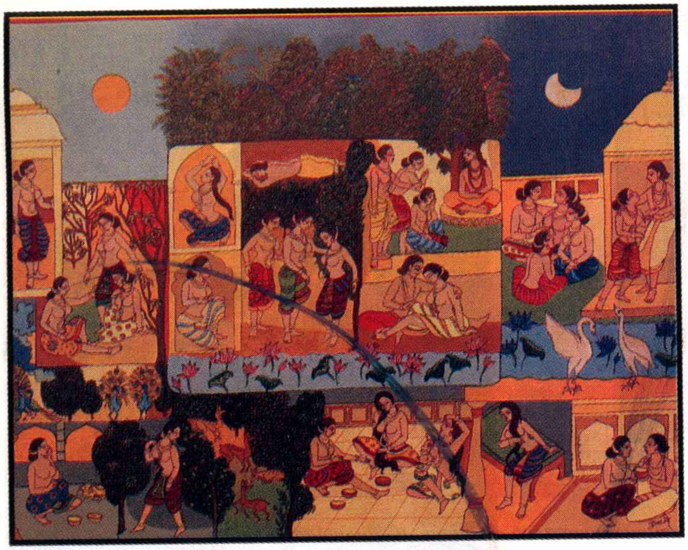

5

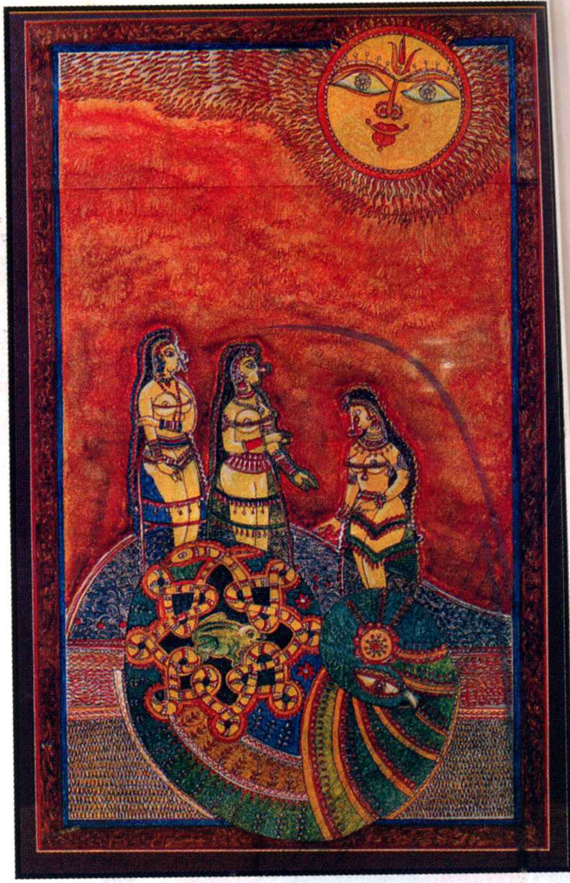

6

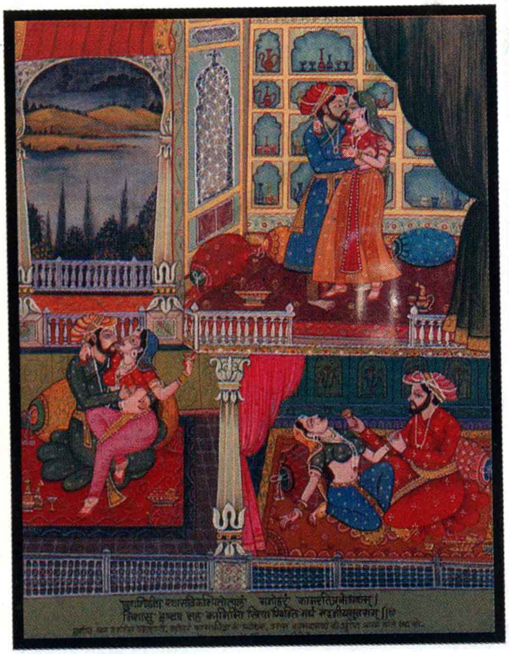

7

8

9

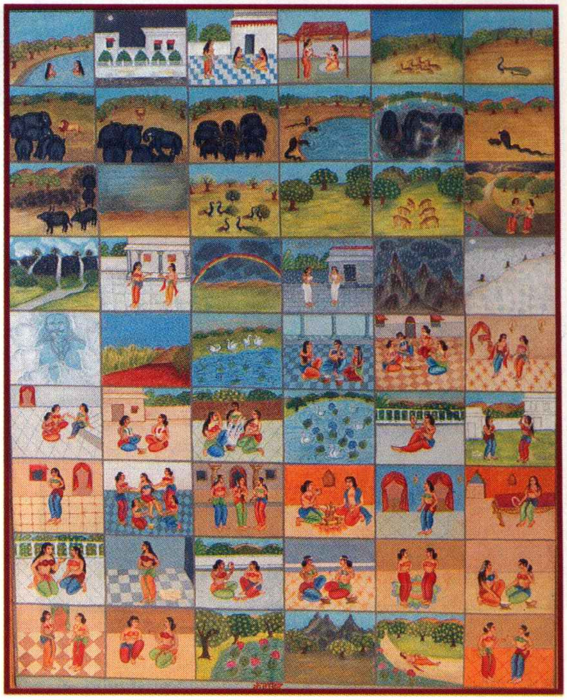
10

11

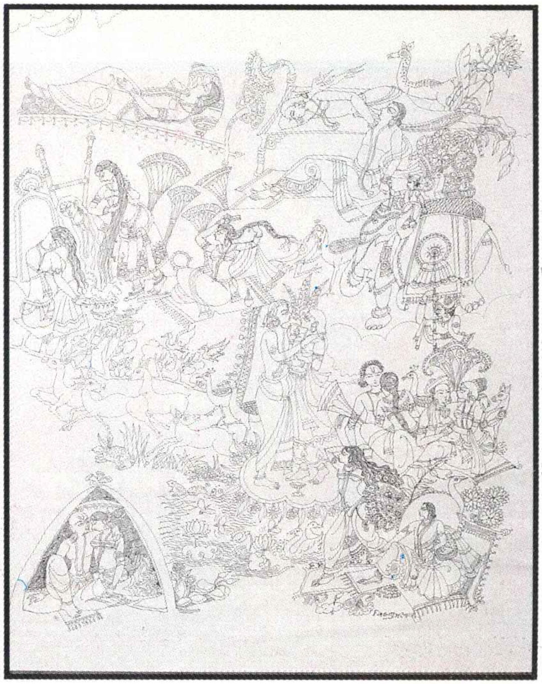
12

13

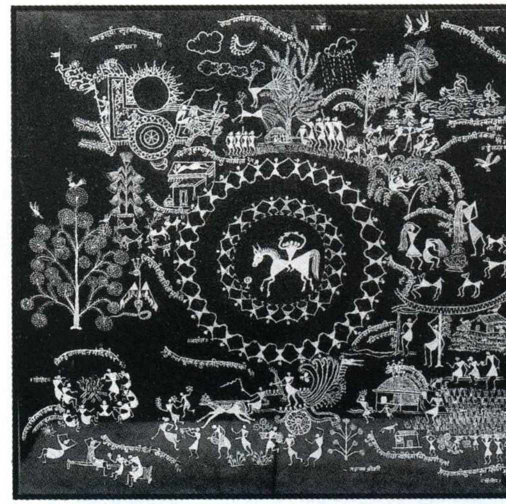

14

15

16

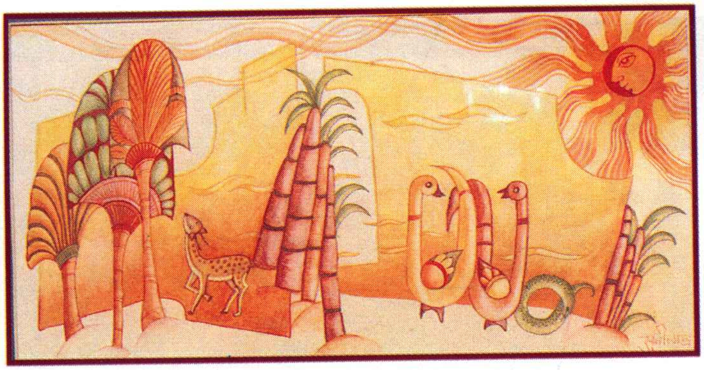

17

18

19

20.

21

22

23

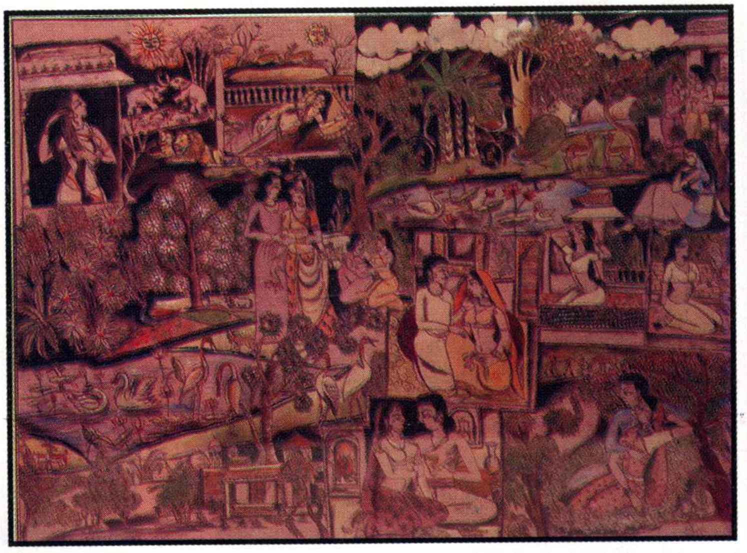

24

25

26

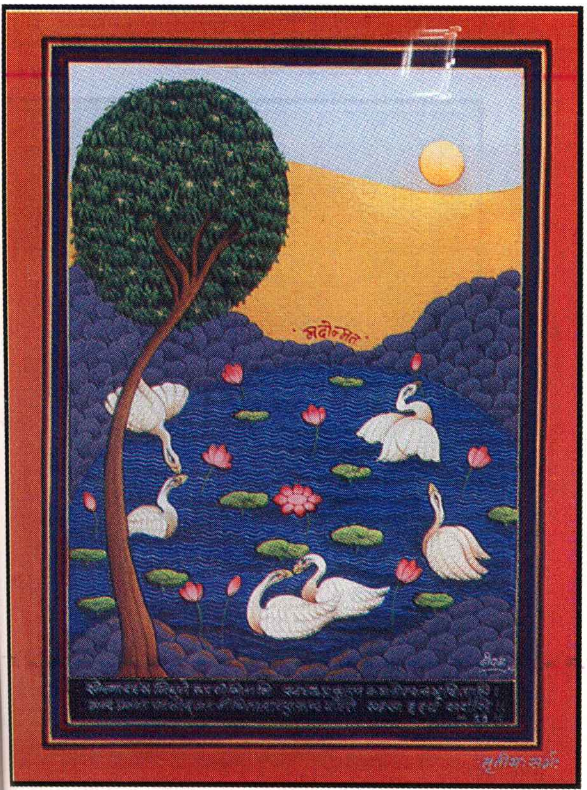

तृतीयः सर्गः

27

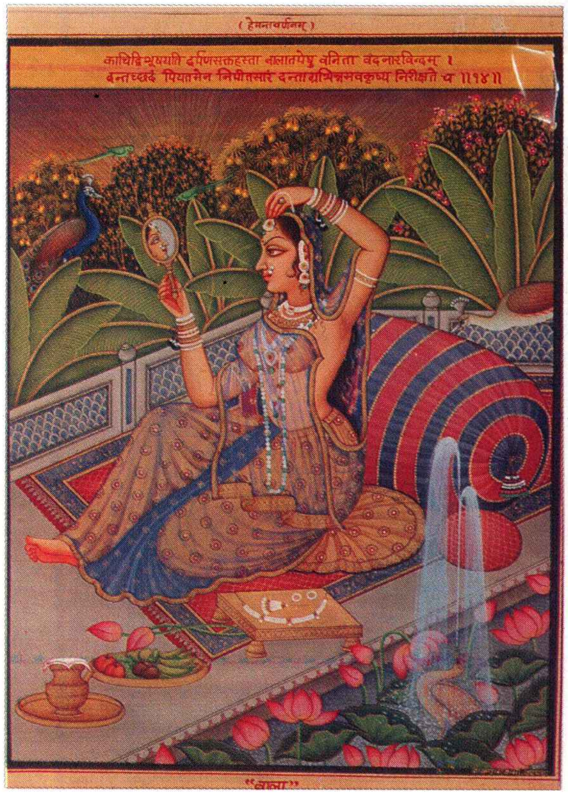

(हेमन्तवर्णनम्)
काचिद्विभूषयति दर्पणसक्तहस्ता बालातपेषु वनिता वदनारविन्दम् ।
दन्तच्छदं प्रियतमेन निपीतसारं दन्ताग्रभिन्नमवकृष्य निरीक्षते च ॥१४॥

28

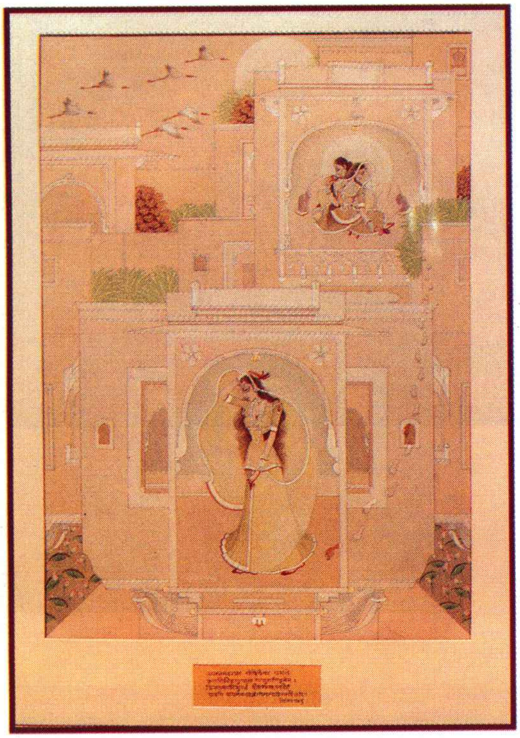
29

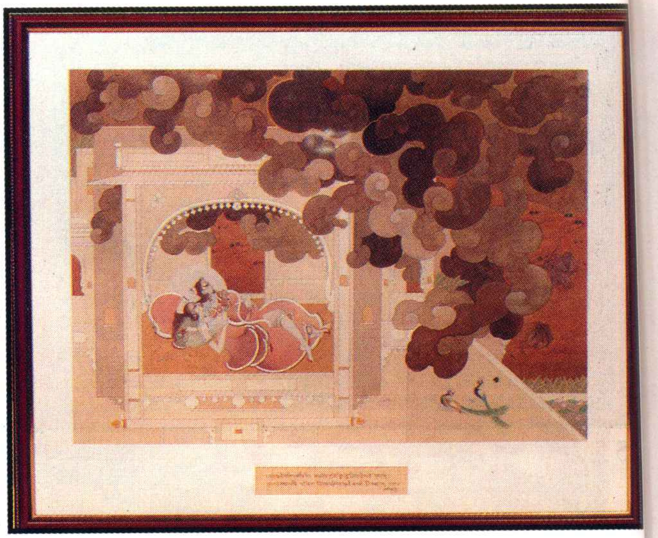
30

31

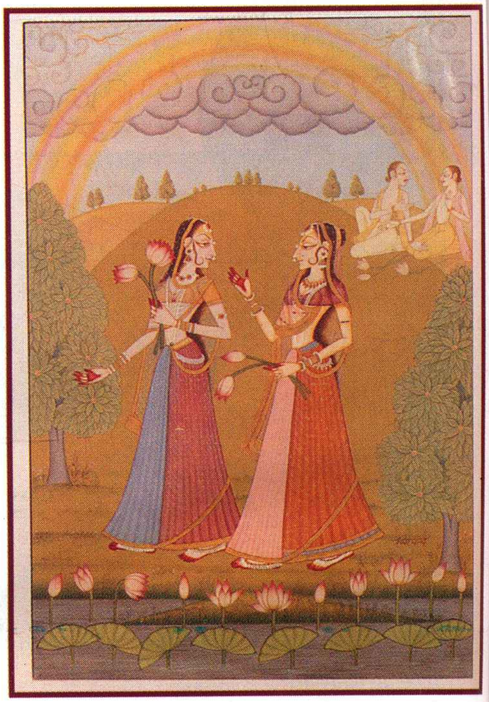
32

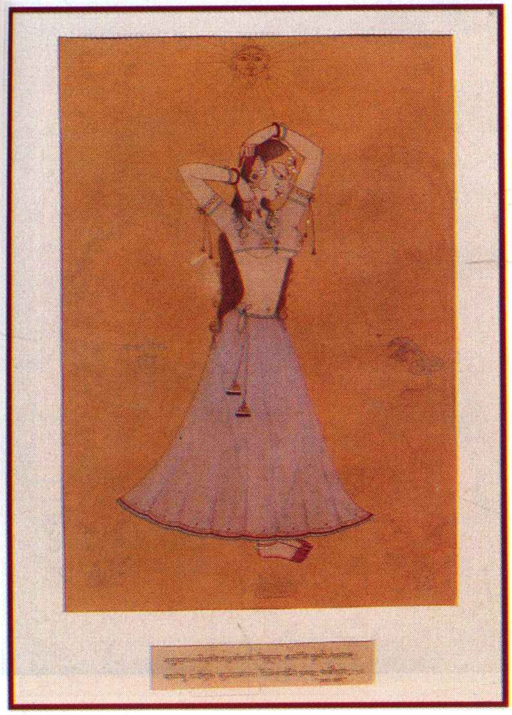

33

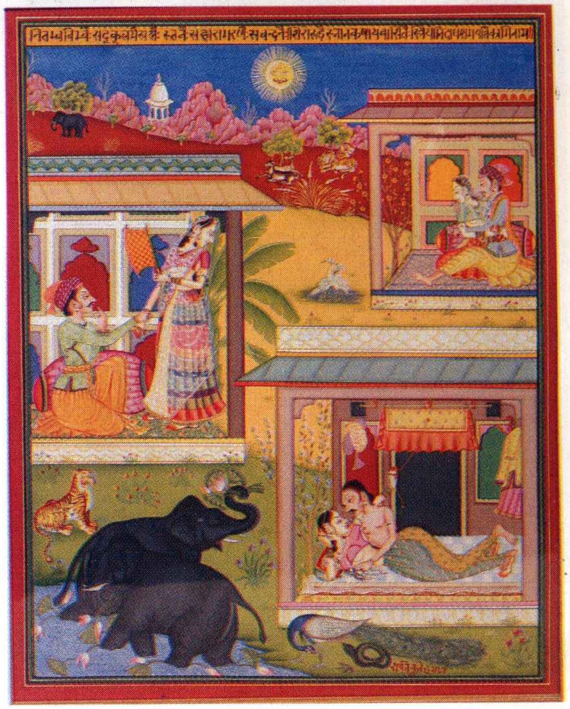

34

35

36

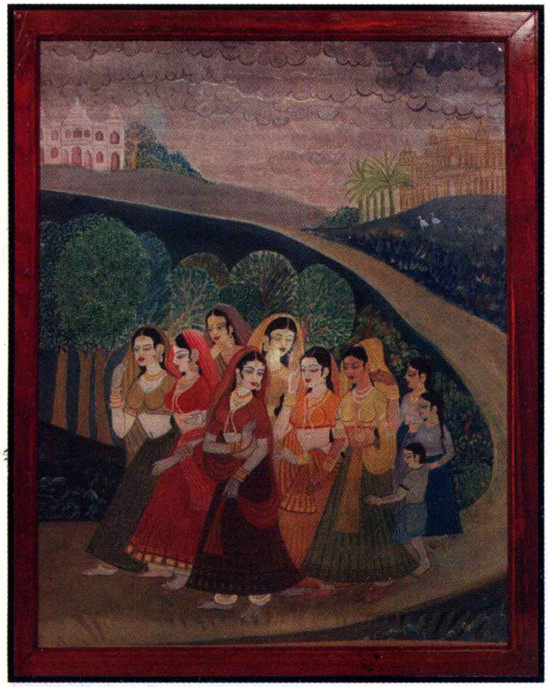

37

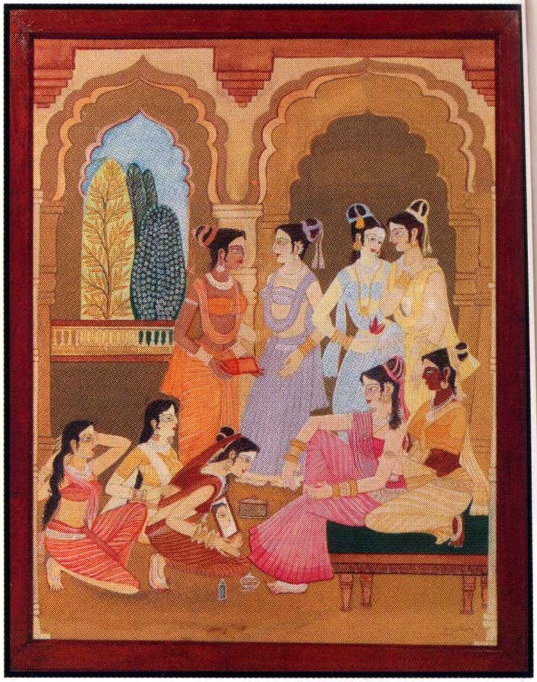

38

39

40

41

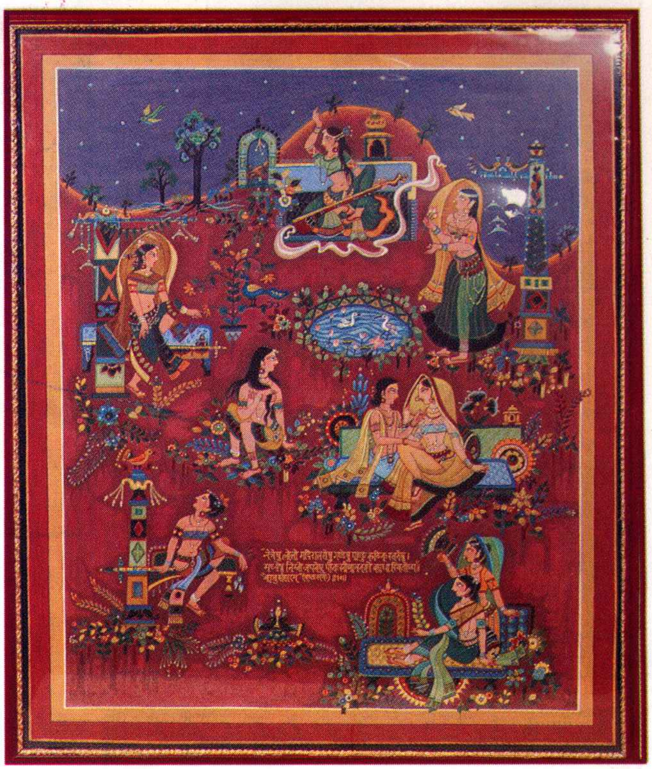
42

43

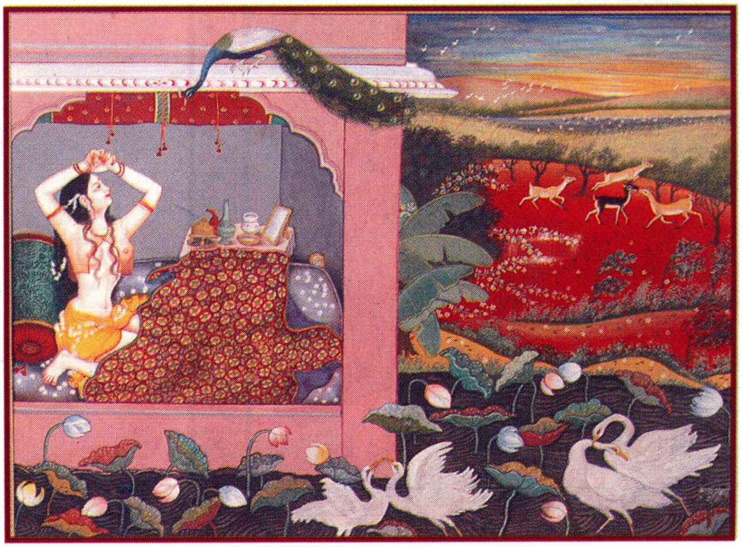
44

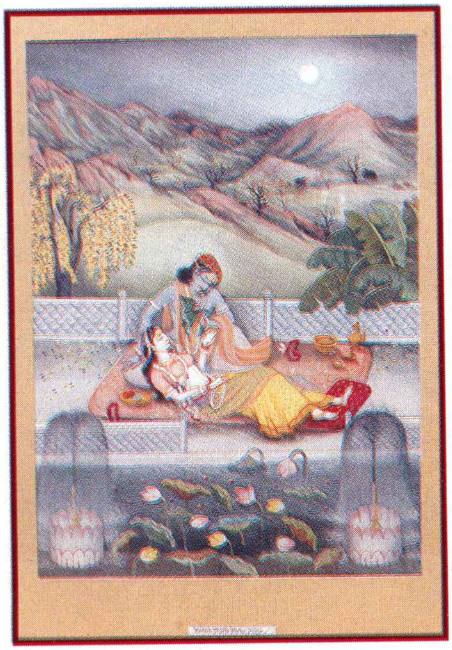

45

46

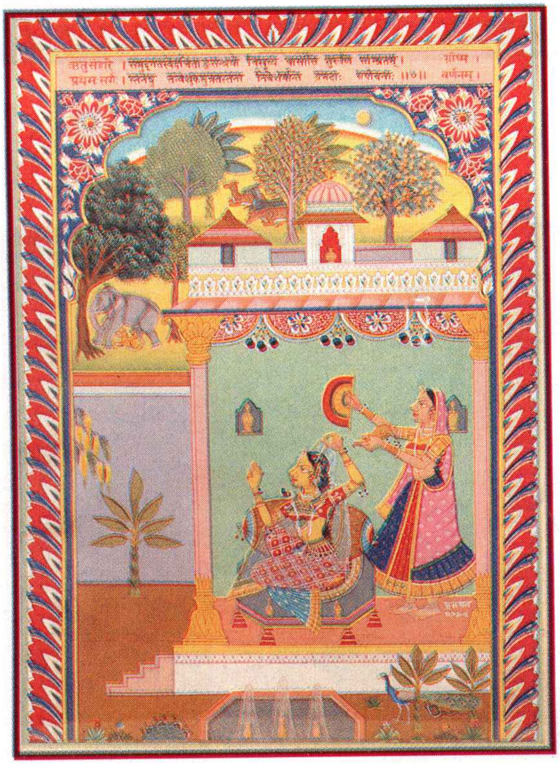

47

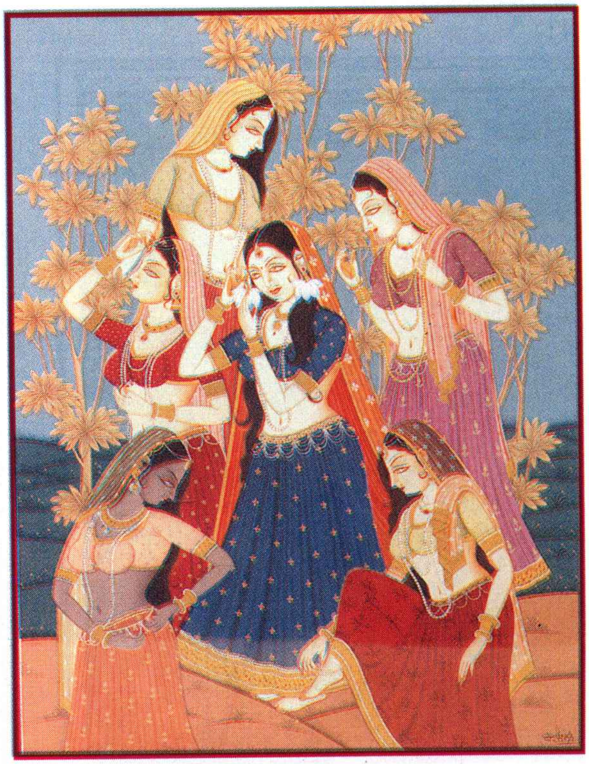

48

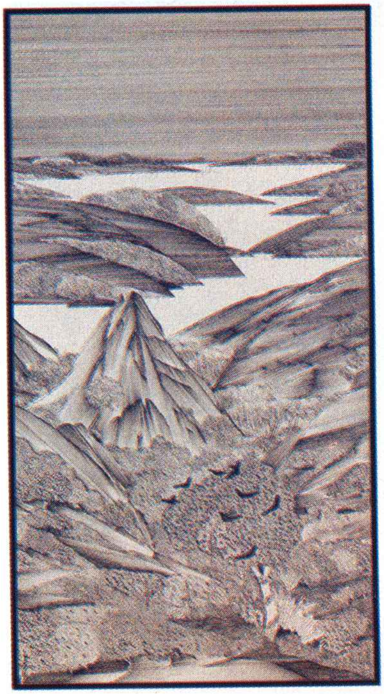

49

50

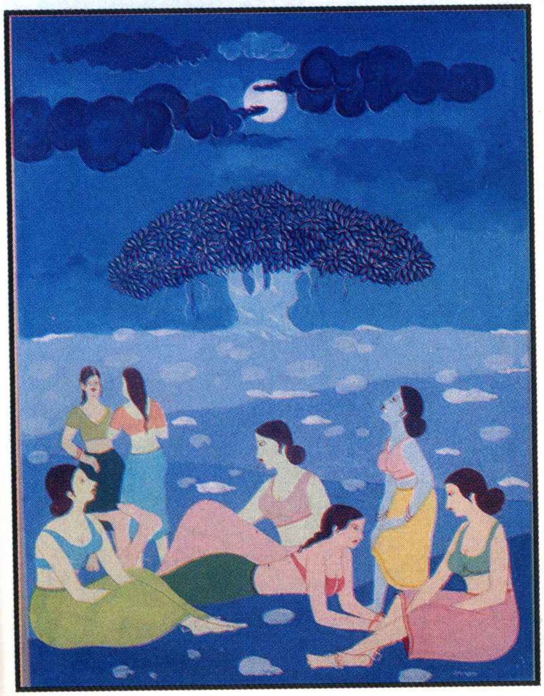

51

52

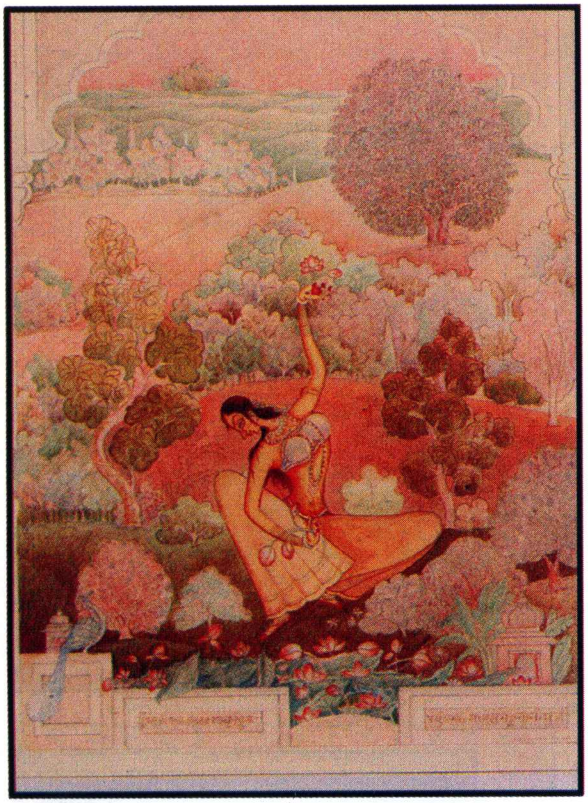

53

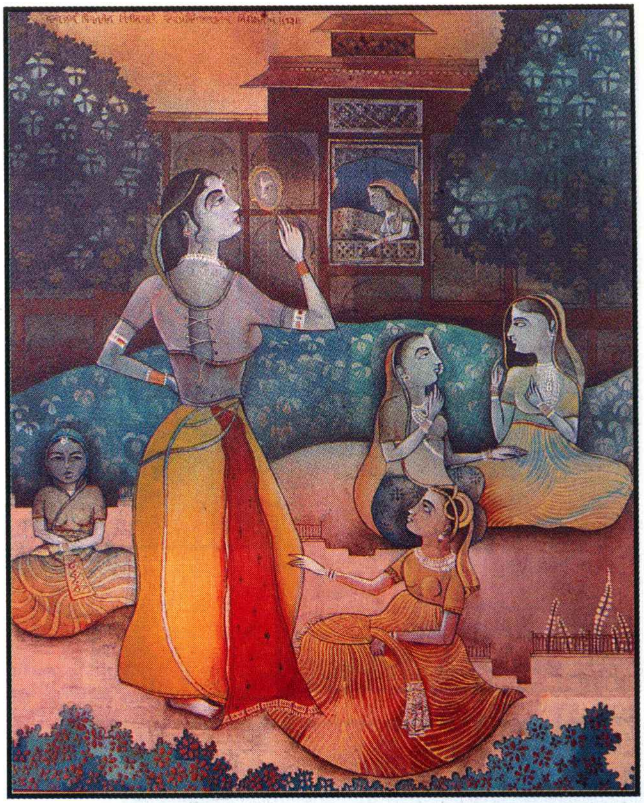

54

55

56

57

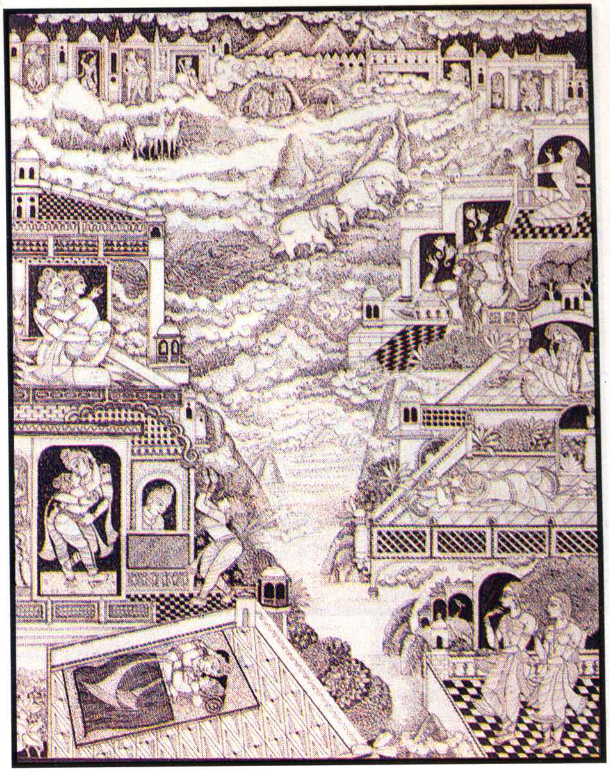
58

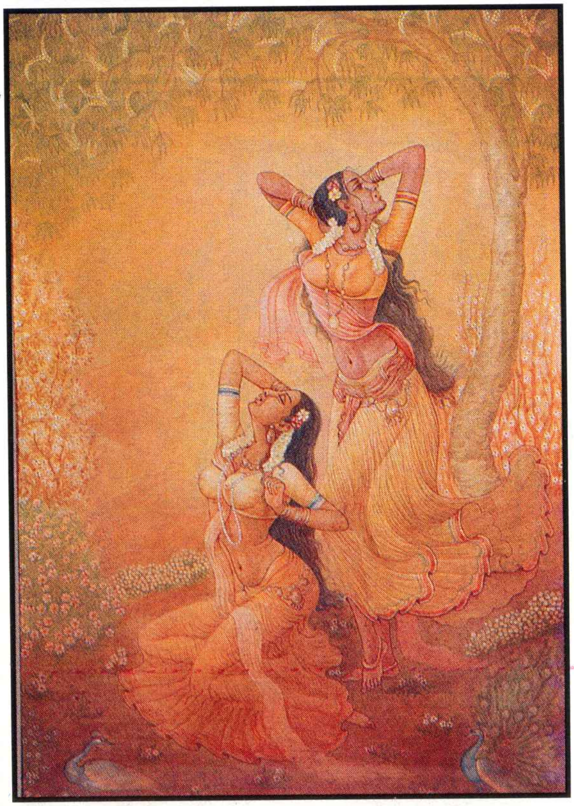
59

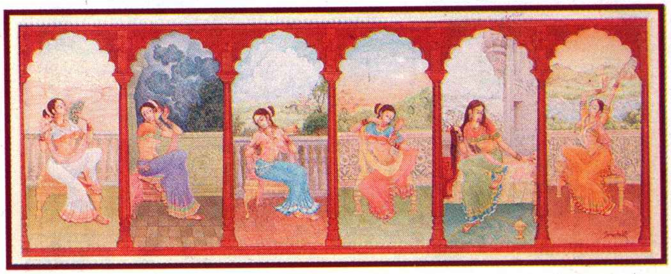
60

61

62

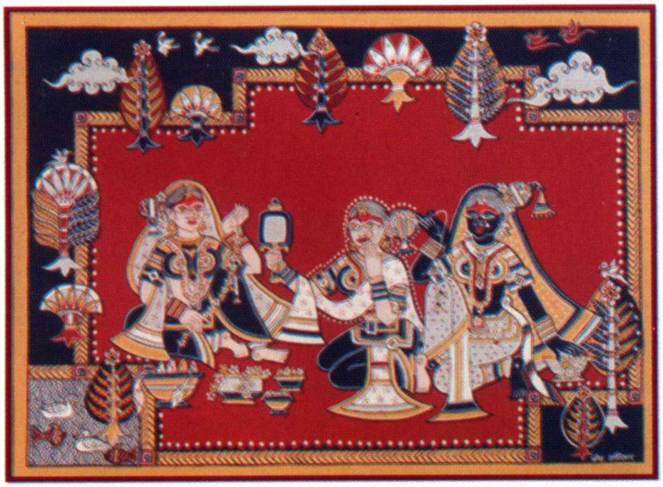

63

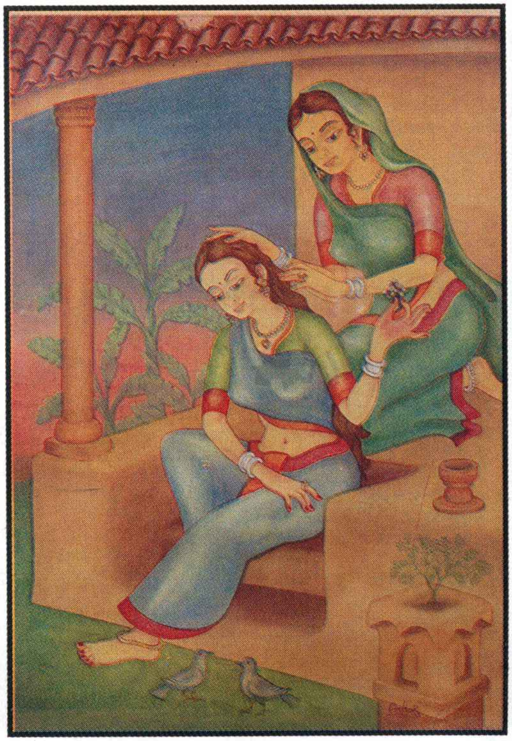

64

65

66

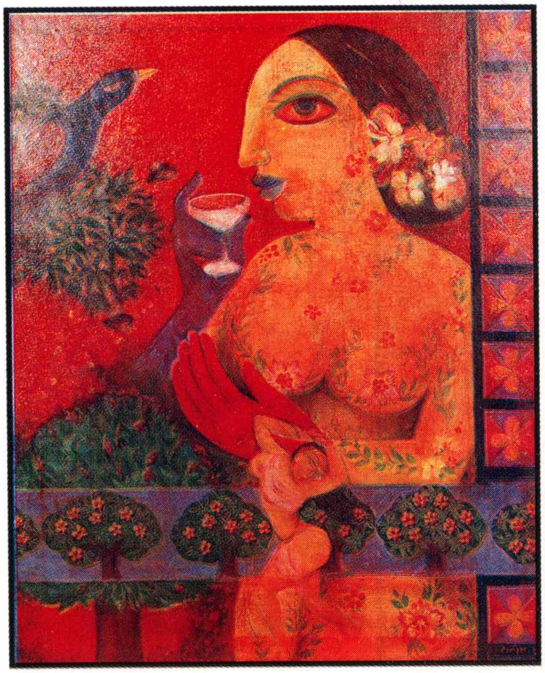

67

68

69

70

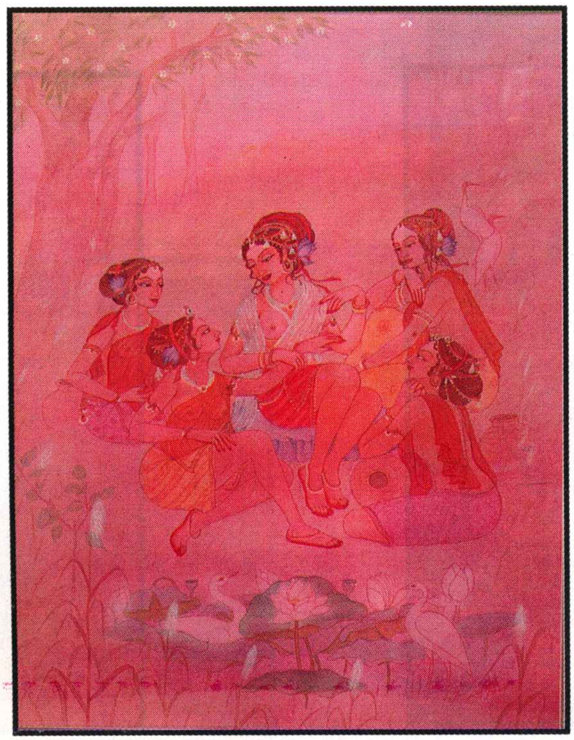

71

1

2

3

4

5

6

7

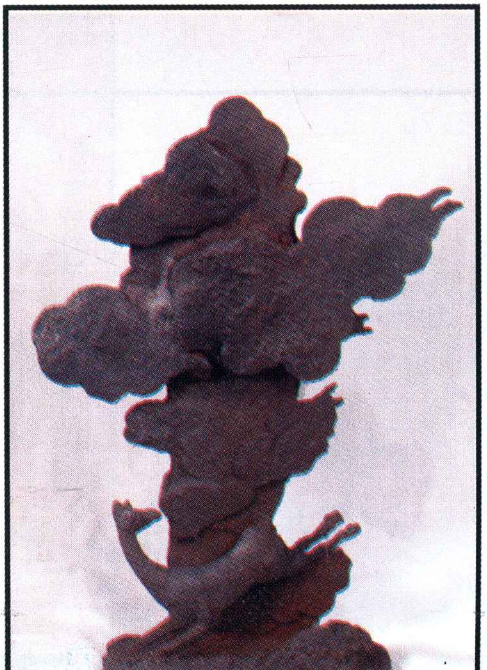
8

9

10

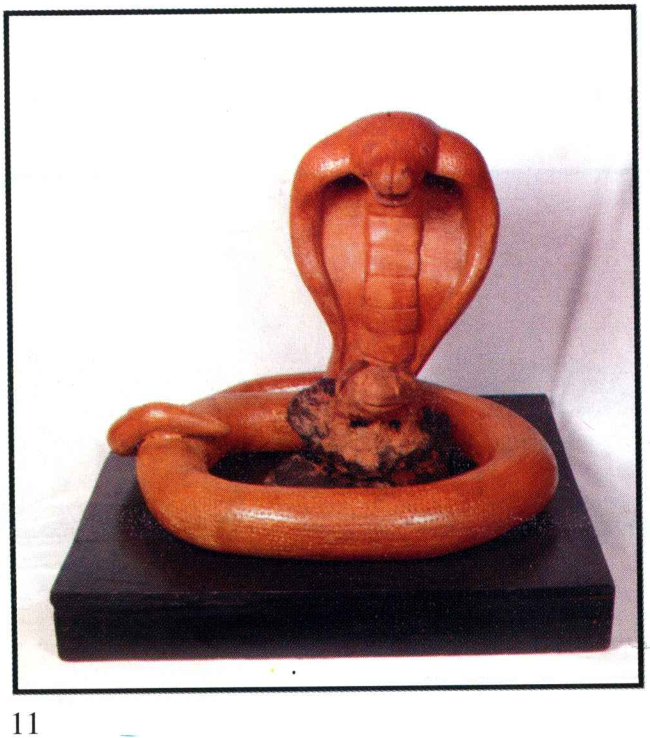

11

12

13

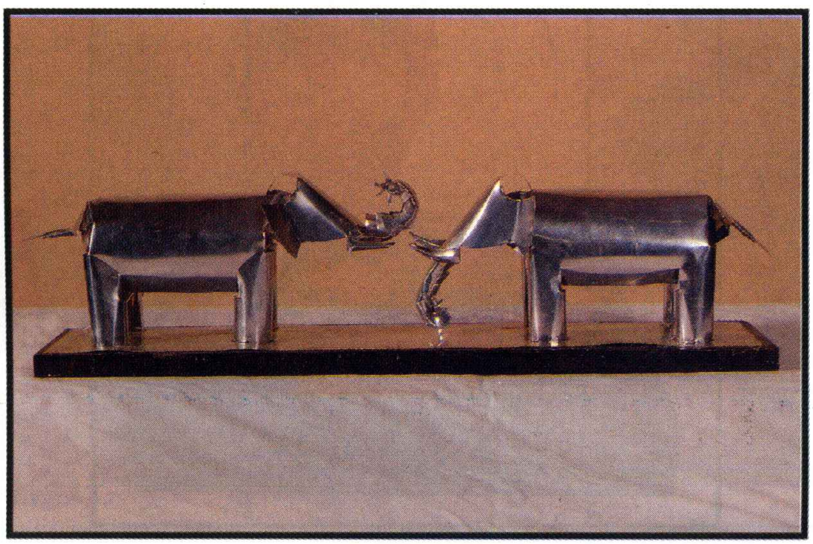

14

15

16

17

वर्णागम शिविर एवं प्रदर्शनी २००५

भारतीय दृष्टि में कला हमारे अनुभवों का चित्रण है जो जीवन के दर्शन को पूर्णता प्रदान करती है। कलात्मक अभिव्यक्ति जहाँ एक ओर सोद्देश्य और गहन है वहीं दूसरी ओर दैनन्दिन आवश्यकता की पूर्ति की तरह सहज एवं सुलभ है। चित्र एवं मूर्तिकला ररूपंकर कलाओं में अग्रगण्य है। भारतीय परम्परा में उनके विविध रूपों का विकास हुआ है, उन पर चिन्तन हुआ है। मूर्ति एवं चित्रकला को समवेत रूप में देखते हुए 'शिल्प' शब्द का भी प्रयोग हुआ है।

चित्र-दर्शन कर आनन्दित होना जितना सहज सरल है, चित्र-रचने की प्रक्रिया उतनी ही दुरूह और जटिल है। किसी चित्रकार के द्वारा किसी उद्दिष्ट चित्र का भाव-बिम्ब मन में बनाना फिर उसे वर्ण तथा तूलिका के माध्यम से सुकुमार रीति से केनवास पर उतारना एक अकुण्ठित साधना है, तपस्या है जिसे कलाकार को साधना पड़ता है। इस प्रकार चित्ररचना की जटिल प्रक्रिया से कलाकृतियों का साक्षात्कार हो सके इसी उद्देश्य से कालिदास अकादेमी ने वर्णागम शिविर श्रृंखला का शुभारम्भ सन् १९८२ में किया। इस आयोजन में आने वाले कलाप्रेमियों के उत्कण्ठित नेत्रों के सामने चित्रकार अपने चित्रों को रूपाकार देते हैं जो अपने आप में अनूठा अनुभव है। इस वर्ष कालिदास अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद् उज्जैन में दिनांक १२ मार्च से १८ मार्च २००५ तक कला का त्रिवेणी संगम हुआ। इस सप्त दिवसीय आयोजन का आकर्षण वर्णागम शिविर के साथ ही देश के ख्याति प्राप्त जयपुर के वरिष्ठ चित्रकार पद्मश्री कृपालसिंह शेखावत की 'बारा मासा' पर आधारित एकल चित्र प्रदर्शनी एवं साथ ही जयपुर के ख्यातिप्राप्त छाया चित्रकार श्री गोपाल आर. कुमावत की 'राजस्थान की कला एवं संस्कृति' पर केन्द्रित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा। वर्णागम शिविर २००५ अपने आपमें अनूठा था। यह विभिन्न शैलियों पर केन्द्रित रहा, इसमें देश के ख्यातिप्राप्त चित्रकारों सहित नवोदित कलाकार भी सम्मिलित थे। प्रमुख रूप से प्रसिद्ध चित्रकार श्री ओ.पी. टभेंक, हिमाचल प्रदेश ने कांगडी शैली में, श्री राजाराम शर्मा, उदयपुर ने पिछवाई शैली में, श्री कैलाश चन्द्र वर्मा, जयपुर ने जैन

राजस्थान की कला एवं संस्कृति पर आधारित छाया चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए विद्वज्जन

चित्र-रचनारत चित्रकार

शैली में श्री आशिष शृंगी, बूंदी ने जनजातीय हाड़ोती शैली में, श्री ऋषिकेश शर्मा, इन्दौर ने मालवा लोक शैली पर, श्री महावीर प्रसाद वर्मा, रतलाम ने लोक शैली पर, श्री नर्मदा प्रसाद टेकाम भोपाल ने गोंड शैली में, श्री फूल चन्द्र वर्मा, जयपुर ने शेखावटी शैली में, श्री अशोक भाई पटेल भावनगर ने सौराष्ट्र शैली में तथा श्री एल.एन सिंहरोडिया, उज्जैन ने लोक कला शैली में, कलाकृतियाँ निर्मित कीं। इसे उज्जैन के सैकड़ों कलाकारों एवं आम दर्शकों ने मुक्त कण्ठ से सराहा। वरिष्ठ चित्रकार डॉ. नाथूलाल वर्मा, जयपुर को विशिष्ट कला व्याख्यान हेतु अकादेमी द्वारा आमन्त्रित किया गया। श्री वर्माजी ने अपने कला व्याख्यान के साथ ही विभिन्न स्टोन रंगों का प्रदर्शन भी किया।

वर्णागम शिविर एवं प्रदर्शनी २००५ का अलग-अलग शुभारम्भ हुआ। दिनांक १२ मार्च को सायं४ बजे वर्णागम शिविर का शुभारम्भ संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य श्री निवास रथ की अध्यक्षता में तथा तत्कालीन जिलाधीश श्रीमान् विवेक अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य एवं विशेष अतिथि द्वय कांगड़ा शैली के वरिष्ठ चित्रकार श्री ओ.पी. टाक हिमाचल प्रदेश तथा वरिष्ठ चित्रकार एवं सह आचार्य राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर से डॉ. नाथूलाल वर्मा थे। पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत की एकल चित्रकला प्रदर्शनी का शुभारंभ सायं ५ बजे माननीय प्रो. राम राजेश मिश्र कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के मुख्य आतिथ्य एवं वरिष्ठ चित्रकार डॉ. आर.सी. भावसार, उज्जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ अतिथि थे वरिष्ठ चित्रकार श्री जी.जे. साल्वे, उज्जैन। जयपुर के छाया चित्रकार श्री गोपाल आर. कुमावत की छाया चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ ५.३० बजे माननीय मोहन गुप्त (पूर्व आयुक्त, उज्जैन संभाग) एवं डॉ. विष्णु भटनागर, वरिष्ठ चित्रकार की अध्यक्षता में तथा श्रीमती सपना अग्रवाल, उज्जैन की विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन संध्या ७ बजे कला रसिकों के ज्ञानार्जन हेतु विभिन्न शैलियों पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में प्रतिदिन सैकड़ों कलाकार भाग लेते थे। साथ ही श्री राजाराम शर्मा, उदयपुर की कृतियों का एवं वरिष्ठ चित्रकार एवं आर्ट डिजाइनर उज्जैन, श्री अक्षय आमेरिया की कृतियों का स्लाईड शो अकादेमी के सभागृह में सैकड़ों कला रसिकों की उपस्थिति में किया गया जिसे सभी ने मुक्त कण्ठ से सराहना की।

वर्णागम शिविर एवं प्रदर्शनी तथा व्याख्यानमाला का समापन बैंक ऑफ इण्डिया के झोनल मैनेजर श्री एम.के. पारिख की अध्यक्षता में तथा उज्जैन संभाग के आयुक्त माननीय श्री जयदीप गोविंद के मुख्य आतिथ्य में हुआ। अतिथियों ने सभी आमन्त्रित अतिथि कलाकारों को प्रतीक चिह्न प्रदान कर पुष्प हारों से सम्मानित किया। स्वागत भाषण अकादमी के निदेशक प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने दिया। संचालन अकादेमी के उपनिदेशक डॉ. जगदीश शर्मा ने किया। शिविर संयोजक आर.पी. शर्मा ने आभार-प्रदर्शन किया।

राजस्थान की कला एवं संस्कृति पर आधारित छाया चित्र प्रदर्शनी हेतु छाया चित्रकार श्री गोपाल आर. कुमावत, जयपुर को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

चित्र-रचनारत चित्रकार

अभिज्ञानशाकुन्तल और कालिदास की चित्रांकन दृष्टि

- नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

अभिज्ञानशाकुंतल कालिदास की कालजयी कृति है। इस कृति के बारे में कहा गया है -

'काव्येषु नाटक रम्यं तत्र रम्या शकुंतला'

अर्थात् काव्य में नाटक और नाटकों में अभिज्ञानशाकुंतल के समान कोई दूसरी रचना नहीं है। इसकी रोचक शैली और इसके रोमांच और रोमांस से भरपूर चरित्र प्रत्येक पाठक और दर्शक को सहज आकृष्ट करते हैं। इसकी मूल कथा यद्यपि महाभारत के आदि पर्व से ली गई है, लेकिन कालिदास ने अपनी मौलिक प्रतिभा से इसका मनोहर विकास किया और वह भी इतने विश्वसनीय ढंग से कि बाद के साहित्य में शाकुंतल की कथावस्तु को ही ऐतिहासिक सामग्री के रूप में स्वीकार कर लिया गया। सात अंकों वाले इस नाटक में दुष्यंत और शकुंतला के प्रणय की कहानी है और यह कहानी इतनी मर्मस्पर्शी और मोहक है कि विश्व साहित्य में इस जैसे नाटक की मिसाल नहीं मिलती। इस नाटक में अद्भुत बिम्बात्मकता है। चितेरों ने इन्हीं बिम्बों को आधार बनाकर अपने चित्र रचे। नाटक के प्रथम अंक में ही उस मृग का चित्रात्मक विवरण है, जो बाण लगने के भय से इस तरह दौड़ रहा है, जैसे वह आकाश में चल रहा हो और दौड़ने के परिश्रम से उसके खुले हुए मुँह से आधी चबाई हुई कुशा मार्ग में गिरती चली जाती है। दुष्यंत के रथ में जुते हुए घोड़ों का वर्णन करते हुए कालिदास यह कहते हैं कि अपने शरीर का आगे का भाग विस्तृत कर, माथे की चौरी को सीधी खड़ी करके तथा कानों को ऊपर उठाकर ये घोड़े इतनी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि उनके पैरों से उठी हुई धूल भी उनके पीछे रह जाती है।

कण्व के आश्रम का जो दृश्य कालिदास से उकेरा है, वह अद्भुत है। निसर्ग की शोभा कालिदास के शब्द-शब्द में रूपायित होती है। घोंसलों में बैठे हुए तोते, अभय भाव से बैठे हुए मृग, छोटी नहर के जल से धुली वृक्षों की जड़ और घी की आहुति से उत्पन्न धुएँ से चमकती हुई कोपलों का बदला रंग- इन सबको कालिदास ने शब्दों के माध्यम से रूपायित किया है। कालिदास की शकुंतला कोई सजी-सँवरी नायिका नहीं है। उसके सौंदर्य की पहचान उसकी कोमलता में है, क्योंकि घड़ों को उठाते-उठाते उसके कंधे ढीले पड़ गए हैं, हथेलियाँ लाल हो गई हैं, साँसें तेजी से चल रही हैं और कानोंमें पहले हुए शिरीष के फूल भी हिल-डुल नहीं रहे हैं, क्योंकि पसीनें की बूँदों से उनकी पाँखुरियाँ कपोलों पर चिपक गई हैं और वेणी के खुल जाने से किसी तरह वह अपने बिखरे हुए केशों को अपने एक हाथ में संभाले हुए है।

अभिज्ञानशाकुंतल के प्रायः हर अंक में इस तरह के सुंदर बिम्ब मिलते हैं। विदूषक और राजा के संवादों में, प्रियंवदा और अन्य सखियों की बातों में तथा कण्व के उस मार्मिक कथन में जब वे शकुंतला की विदाई के समय तपोवन के वृक्षों से कहते हैं कि वह शकुंतला अब विदा हो रही है, जो पहले तुम्हें जल पिलाए बिना स्वयं नहीं पीती थी, जो अपने आभूषणों को पहनने की प्रेमी होने पर भी तुम्हारे स्नेह के कारण तुम्हारे कोमल पल्लवों में हाथ नहीं लगाती थी, तुम्हारी नई कलियों को देखकर ही जिसके उत्सव मन जाया करते थे। विदा होती शकुंतला आम के वृक्ष से लिपटती है। उसकी विदा बेला में हिरणियाँ चबाई हुई दूब के ग्रास को उगल देती हैं, मयूर अपना नृत्य बंद कर देते हैं और लताएँ अपने पीले-पीले पत्ते आँसुओं की तरह गिरा देती हैं। शकुंतला के पुत्र के समान वह मृग जिसे उसने मुट्ठी-मुट्ठी भर साँवे के दानों को खिलाकर पाला था, वह उसका मार्ग रोकता है।

शकुंतला के दुष्यंत के यहाँ पहुँचने पर जो कुछ भी घटित होता है. वह भी बड़ा नाटकीय और बिम्बात्मक है। कालिदास ने छठे अंक में आम की मंजरी और कुरबक के बड़े कलात्मक संदर्भ दिए हैं। इस अंक में विदूषक दुष्यंत को याद दिलाता है कि अंत:पुर की दासी चतुरिका को उसने आदेश दिया था कि माधवी मंडप में वह उसकी चित्र लिखने वाली पट्टी में स्थित उसके हाथ से बना हुआ देवी शकुंतला का चित्र ले आए। फिर जब चित्र सामने आता है तो चतुरिका उस चित्रपट को लिखित देवी की संज्ञा देती है और विदूषक कहता है कि इसके मनोभावों की झलक तो इसके सुंदर अंगों की लिखावट से देखने योग्य बन गई है और सानुमती कहती है कि राजर्षि के चित्र-लेखन में ऐसी निपुणता है कि उसे अनुभव होता है जैसे उसकी सखी शकुंतला उसके सामने खड़ी है और राजा दुष्यंत यह स्वीकारते हैं कि शकुंतला की सुंदरता तो इन रेखाओं में बहुत थोड़ी ही आ पाई। विदूषक कहता है कि सींचने के कारण गीले नए-नए पत्तों वाले आम के वृक्ष के पास जो थकी-सी खड़ी चित्रित की गई है, वही शकुंतला है, जिसके ढीले-ढाले केशपाश से फूल नीचे गिरे जा रहे हैं, मुँह पर पसीने की बूँदें झलक रही हैं और जिसके दोनों कंधे नीचे की ओर झुक गए हैं। तब राजा कहता है कि इस चित्र में एक छोर पर काला-काला पसीजी हुई उसकी अँगुली का चिह्न दिखाई पड़ रहा है और उसकी आँखों से जो आँसू टपका है, उसके कारण शकुंतला के कपोल का रंग कुछ कम हो गया है। दुष्यंत की दृष्टि में यह चित्र भी अधूरा ही है और फिर इसी अंक में अभिज्ञानशाकुंतल का वह सुप्रसिद्ध श्लोक आता है, जो चित्रांकन की भारतीय अवधारणा को अपनी इन चार पंक्तियों में ही पिरो देता है। इस अधूरे चित्र को राजा दुष्यंत उन स्थलों का अंकन कर पूर्ण करना चाहते हैं, जो छूट गए थे। वे कहते हैं -

कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी
पादास्तामभितो निषण्णहरिणा गौरीगुरोः पावनाः।
शाखालंबितवल्कलस्य च तरोर्निर्मातुमिच्छाम्यधः
शृंगे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूमयमानां मृगीम् ॥

अर्थात् अभी मुझे ऐसी मालिनी नदी अंकित करनी है, जिसकी रेती में हंस के जोड़े बैठे हुए हैं, उसके दोनों ओर पार्वती के पिता हिमालय की वे छोटी-छोटी उपत्याएँ अंकित करनी हैं, जिनमें हिरण बैठे हुए हों। ऐसा एक वृक्ष भी अंकित करना चाहता हूँ, जिस पर ऋषियों के वल्कल वस्त्र टँगे हुए हों और जिसके नीचे एक हिरणी अपनी बाँई आँख को अपने प्रिय काले हिरण के सींग से रगड़-रगड़ कर खुजला रही हो। विदूषक यह टिप्पणी करता है कि राजा इस अधूरे चित्र को पूरा करते समय इसे उन तपस्वियों के समूह से भर देंगे, जिनकी लंबी-लंबी दाढियाँ होती हैं। फिर दुष्यंत कहते हैं कि शकुंतला का चित्र तो अभी अधूरा है क्योंकि अभी उसके कानों में पहने हुए सिरस के पुष्प को वे नहीं बना सके, जिसके डंठल को शकुंतला ने अपने कानों पर रखा था और जिसका पराग उसके कपोलों पर फैला हुआ था। अभिज्ञानशाकुंतल का सौंदर्यबोध अपने आप में विलक्षण है। कालिदास के शब्दों में रस की तन्मयता है और इस रस में सब कुछ विलय हो जाने के बाद जो बचता है, वह सिर्फ एक ही भाव बचता है, जो शब्दों को दृश्य में और दृश्य को शब्द में बदल देता है। न केवल 'अभिज्ञानशाकुन्तल' बल्कि कालिदास के साहित्य में बिना प्रकृति के उपादानों के कोई चित्र पूरा नहीं बनता। आम की छाया, नवमल्लिका, दूर क्षितिज पर हिमालय की धुँधली-सी रेखा, शिरीष का फूल और मृणाल सूत्र के साथ-साथ मालिनी नदी के बलुआ तट पर हंस के जोड़ों का विहार और हिरणों के विश्वास के चित्रण के बिना कालिदास के चित्रांकन की अवधारणा अधूरी है।

अभिज्ञानशाकुंतल के प्रसंगों पर आधारित १९ वीं शताब्दी के कुछ चित्र एन.सी. मेहता गैलरी, अहमदाबाद में संरक्षित हैं। मेघदूत के प्रसंगों पर आधारित कांगड़ा शैली में, उत्तर मध्यकाल में बने कुछ चित्र लाहौर म्यूजियम, पाकिस्तान में हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में कुमारसंभव के प्रसंगों के आधार पर पहाड़ी शैली के कुछ चित्र हैं। इनके अलावा राजस्थानी व दकनी शैलियों के सम्मिश्रण से बने २१ चित्र जो अभिज्ञानशाकुन्तल के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित हैं, वे भी राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में हैं। राजकीय संग्रहालय, उदयपुर में रघुवंशम् के प्रसंगों पर आधारित १७ वीं सदी के कुछ दुर्लभ चित्र मौजूद हैं। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर पहाड़ी कलमों में कालिदास काव्य का चित्रण राजपूत शैलियों की तुलना में अधिक है। अभिज्ञानशाकुंतल के प्रसंगों के आधार पर हिमाचल प्रदेश की एक छोटी-सी रियासत हिन्दूर में, हिन्दूर कलम से बनाए गए ५३ चित्र हैं। ये राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में हैं तथा इन पर डॉ. दलजीत व प्रो. पी.सी. जैन ने एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित किया है। इसके अलावा ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ने एक फोलियो भी प्रकाशित किया है। ये चित्र सन् १९२५ से १८३० के बीच बनाए गए हैं। इन सभी ५३ चित्रों पर कांगड़ा कलम के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। महाभारत के प्रसंगों पर तथा विषय की परिधि से बाहर जाकर भी चितेरे ने अपनी कल्पनाशीलता के आधार पर इन चित्रों को उकेरा है। शिकार करते दुष्यंत, उनसे हाथ जोड़कर पवित्र स्थान पर शिकार न करने का आग्रह करते ऋषि, पहाड़ी वेशभूषा में कत्थई रंग की ओढनी और सफेद रंग के लहँगे में अपनी दो सहेलियों के साथ चित्रित की गई शकुंतला, दरबारियों से विचार-विमर्श करते उदास दुष्यंत, प्रणयरत दुष्यंत और शकुंतला, अपनी ओर झपट पड़ी मक्खियों को भगाने का प्रयास करती शकुंतला, हरियाली से भरपूर आश्रम, शकुंतला की वियोग मुद्रा, उसका शृंगार, हिरण, मयूर और तोते, कण्व के आश्रम में उतरती साँझ, साँझ के बाद आने वाली रात्रि, ये सब इन चित्रों में साकार कर दिये गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि निसर्ग की पूरी शोभा इन चित्रों में उतर आई हो और चितेरे ने कालिदास के शब्द व्यंजना को, उनके अनुपम सौंदर्यबोध को, कला दृष्टि को रंगों और रेखाओं में बाँध दिया हो।

कालिदास के काव्य के आधार पर बनाए गए मध्यकालीन लघुचित्र तथा राजा रवि वर्मा के तैलचित्र न केवल भारत के विभिन्न संग्रहालयों में अपितु इंग्लैंड, अमेरिका और जर्मनी के विभिन्न संग्रहालयों में मौजूद हैं, जिनका विशद अध्ययन किया जाना आवश्यक है। गीत-गोविंद के चित्रांकनों पर तो काफी कार्य हुआ, किंतु कालिदास के काव्यों पर आधारित चित्रों का अध्ययन तथा चित्रांकन के संदर्भ में कालिदास के शब्द-रूपायन की समग्रता में समीक्षा की जानी आवश्यक है। यह कार्य अकादमिक दृष्टि से किया जाना जरूरी नहीं है, बल्कि इसलिए जरूरी है ताकि वह लोक अपने चित्रांकन से परिचित हो सके, जो कालिदास के दृष्टिपथ में था और जो उनके सृजन में निरंतर स्पंदित होता रहता था।

चित्रात्मकता कालिदास के कृतित्व की धड़कन है, जिनके कारण उनका सृजन जीवंत है और ये धड़कनें ऐसी हैं, जिन्हें कभी नहीं थमना, क्योंकि इनका धड़कना ही भारतीय कला-यात्रा के निरंतर आगे बढाने की इकलौती परिभाषा है।

ऋतुसंहारम् - कथासार

इस काव्य में कालिदास ने पूरे वर्ष को छह ऋतुओं में विभाजित कर शृंगार की पृष्ठभूमि में सरस वर्णन किया है। सम्पूर्ण काव्य प्रिया को सम्बोधित कर रचा गया है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुओं के जो चित्र प्रस्तुत किए गये हैं, वे अत्यन्त रम्य और चित्ताकर्षक हैं -

प्रचण्डसूर्य: स्पृहणीयचन्द्रमा:
सदावगाहक्षतवारिसञ्चय:।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो
निदाघकालोऽयमुपागत: प्रिये।।

'सूरज तीखा', चाँद सुहाना, निरन्तर नहाने से पानी का संग्रह भी समाप्त, साँझ सुहानी, काम शिथिल। प्रिये, गर्मी का मौसम आ गया।'

प्रचण्ड धूप से तपती धरती और असह्य धूल भरी आँधी इस मौसम में आम बात है। सूरज की तीखी किरणों से तपी धूल से जलता हुआ साँप नीचा मुँह किये अपने सहज शत्रु मयूर की छाया में जा छिपता है और मोर भी उसे नहीं मारता। मेंढक तालाब के गर्म पानी से निकल कर साँप के फन तले जा बैठा। फेन और लार टपकाती लाल जीभ वाली प्यासी जंगली भैंसें पानी की खोज में पहाड़ों में से निकल आती हैं। सूखे पत्तों वाले पेड़ों पर बैठे पंछी हाँफ रहे हैं। थके हारे वानर पहाड़ी झाड़ियों की ओर जा रहे हैं, नीलगायें पानी की खोज में भटक रहीं हैं और शरभ समूह (स्याहगोश) सीधा उतरकर कुएँ से जल पी रहा है।

और इस तपन को शान्त करती यह वर्षा ऋतु आ गयी। अब मेघ बरसने लगे, नदियाँ बहने लगीं, हाथी चिंघाड़ने लगे, वन सुहाने हो गये, विरही रोने लगे, मोर नाचने लगे और वानर आसरा खोजने लगे।

कांस की ओढनी पहने, खिले कमलों का मनहर मुख, मदमाते हंसों की ध्वनि की नूपुर-रुनझुन, पकी साल की झुकी कमनीय काया! लो, रूपरमणीया नव-वधू सी यह शरद् ऋतु आ गयी।

शरदागम पर कांस से धरती, शुभ्र ज्योत्स्ना से रात, हंसों से सरिताओं का जल, कुमुद से तालाब, मालती लताओं से उपवन और फूलों से झुके सप्तवर्ण से वन सफेद हो गये।

और यह हेमन्त-फसल में नयी-नयी कोंपलें फूट रहीं, लोध्र फूल गये, साल पक गयी, कमलों का लोप हो गया, पाला पड़ रहा है।

अब साल और ईख से धरती ढक गयी। सारसों की ध्वनि से गूँजता, कामिनियों का प्यारा है यह शिशिर! इसमें आग, सूरज की धूप और भारी वस्त्रों का सेवन किया जाता है। स्वादिष्ट गुड़ और काकब (राब) इस समय प्रचुर मात्रा में मिलता है।

पेड़ों पर फूल, पानी में कमल, स्त्रियों में काम, पवन में गन्ध, साँझ सुहानी, दिन सुहाने, वसन्त में सब कुछ सुहाना ही सुहाना।

द्रुमा: सपुष्पा: सलिलं सपद्मं
स्त्रिय: सकामा: पवन: सुगन्धि।
सुखा: प्रदोषा दिवसाश्च रम्या:
सर्वं प्रिये! चारुतरं वसन्ते।।

कालिदास ने पूरे वर्ष की बदलती ऋतु-कामिनियों का, बदलती धरा-रमणीयता का ललित पदावली में जो विवरण प्रस्तुत किया है, वह उनके प्रगाढ़ प्रकृति प्रेम को ही व्यक्त करता है। विन्ध्य-मालव भूमि का वर्णन कर कवि अपनी धरा और अपने देश की अर्चना, प्रकृति-गीत के कुसुमों से करता है। प्रकृति के आलम्बनपरक वर्णन का यह पहला सम्पूर्ण काव्य है। यह सम्भव है कि समय-समय पर विभिन्न ऋतुओं पर रचे छन्दों का बाद में सिलसिलेवार संकलन कर लिया गया हो। मुक्तक छन्दों में रची कवि की आरंभिक रचना है - ऋतुसंहार!

(डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित रचित
'कालिदास' पुस्तिका से साभार)

मध्य प्रदेश संस्कृत बोर्ड एवं लोक शिक्षण संचालनालय तथा स्कूली शिक्षा विभाग, भोपाल के तत्वावधान में कालिदास अकादमी उज्जैन द्वारा पुरानी विधानसभा भोपाल में आयोजित वरिष्ठ चित्रकारों की कालिदास साहित्य पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए महामहिम राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़।

वर्णागम शिविर का शुभारंभ करते हुए वरिष्ठ चित्रकार डॉ. नाथूलाल वर्मा, जयपुर, समीप ही हैं माननीय कुलपति प्रो. राम राजेश मिश्र, संस्कृतविद् आचार्य श्रीनिवास रथ, वरिष्ठ चित्रकार श्री ओ.पी. टांक, डॉ. आर.सी. भावसार, श्री जी.जे. साल्वे एवं अकादमी निदेशक डॉ. कमलेशदत्त त्रिपाठी

॥ सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम् ॥

कालिदास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
विश्वविद्यालय, मार्ग उज्जैन-४५६०१०
दूरभाष - ०७३४-२५१५४०४,२५२४०५१

E-mail-kalidasa@sancharnet.in
Visit us at: www.kalidasaakademi.org